हम ऐसे आध्यात्मिक संकट के समय में जी रहे हैं, जो गहरी छल और भ्रम से भरा है। पिछली पीढ़ियों की तुलना में आज की आध्यात्मिक लड़ाई और भी सूक्ष्म और छलपूर्ण है। यह लड़ाई न केवल संसार के खिलाफ है, बल्कि चर्च के दिल के खिलाफ भी है। इस लड़ाई के केंद्र में शैतान है, जो जानता है कि नया विधान की शक्ति पवित्र आत्मा की उपस्थिति और कार्य में निहित है, इसलिए वह लगातार उस आत्मा की नकल और धोखा देने वाला रूप भेजता है।

शैतान जानता है कि यदि पवित्र आत्मा चर्च में स्वतंत्र रूप से कार्य करने पाए तो अनेकों रूपांतरित होंगे, समर्थित होंगे, और उसके चंगुल से छुड़ जाएंगे। इसलिए वह झूठे आत्मा भेजता है—जो पवित्र आत्मा की तरह दिखते हैं, पर वे लोगों को सत्य, पवित्रता और मसीह-केंद्रित जीवन से भटका देते हैं।

इसलिए शास्त्र हमें चेतावनी देता है:

> “प्रियजनों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं की परीक्षा करो कि वे परमेश्वर से हैं या नहीं; क्योंकि कई झूठे भविष्यद्रष्टा संसार में आए हैं।”
> *— 1 यूहन्ना 4:1 (ERV-HI)*

सिर्फ हर आध्यात्मिक अनुभव को उसी रूप में स्वीकार करना पर्याप्त

नहीं है। हमें परमेश्वर के वचन द्वारा आत्माओं की परीक्षा करनी चाहिए। नीचे पाँच मुख्य बाइबिल के संकेत दिए गए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि किसी के पास सच्चा पवित्र आत्मा है या वह किसी नकली आत्मा के प्रभाव में है।

---

1. पवित्र आत्मा पवित्रता उत्पन्न करता है

“पवित्र आत्मा” नाम नहीं, बल्कि उसकी प्रकृति और कार्य का वर्णन है। जब वह किसी विश्वासवादी के जीवन में आता है, तो उसका पहला उद्देश्य उसे पवित्र बनाना होता है, उसे पाप से अलग करना और मसीह की छवि में ढालना।

> “क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है?”
> — *1* कुरिन्थियों *3:16 (ERV-HI)*

> “पर आत्मा का फल है : प्रेम , आनन्द , शांति , धैर्य , दया , भलाई,
> विश्वास , नम्रता , संयम ...”
> — ग़लातियों *5:22-23 (ERV-HI)*

यदि तुम कहते हो कि तुम्हारे पास पवित्र आत्मा है, परन्तु तुम पाप में सहज हो, जैसे व्यभिचार, असभ्य आचरण, सांसारिक मनोरंजन की रुचि, या अनुत्पादक घमंड में लगे हो, तो तुम्हें उस आत्मा के स्रोत पर ध्यान देना चाहिए। बोलना या आध्यात्मिक उपहार दिखाना पवित्र आत्मा की उपस्थिति की पुष्टि नहीं करता, जब तक कि पवित्रता के फल न दिखें।

येशु ने कहा :

> “तुम उन्हें उनके फलों से जानोगे।”
> — मत्ती *7:16 (ERV-HI)*

---

2. पवित्र आत्मा तुम्हें सत्य की ओर ले जाता है

आत्मा का काम पवित्रशास्त्र को प्रकट करना और विश्वासियों को परमेश्वर की इच्छा की गहरी समझ देना है। वह वचन के द्वारा मसीह को प्रकट करता है और हमें आज्ञाकारिता में चलना सिखाता है।

> “परन्तु जब वह सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सम्पूर्ण सत्य में मार्ग दिखाएगा *...”*
> — यूहन्ना *16:13 (ERV-HI)*

यदि तुम वर्षों से ईसाई हो, फिर भी आध्यात्मिक रूप से अधपका हो, शास्त्र के अध्ययन में असमर्थ हो, और चिह्न, चमत्कार, या दानवों के विषय में अधिक ध्यान देते हो बजाय सुसमाचार के, तो कुछ आध्यात्मिक रूप से गलत है। सच्चा पवित्र आत्मा कभी किसी को अंधकार में नहीं छोड़ता।

पौलुस प्रार्थना करता है:

> “*...*कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पिता परमेश्वर तुम्हें ज्ञान की आत्मा और उसकी प्रसिद्धि में बुद्धि दे।*”*
> — इफिसियों *1:17 (ERV-HI)*

3. पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करता है

पवित्र आत्मा स्वयं को या मनुष्य को महिमा नहीं देता। उसका काम मसीह को विश्वासियों के हृदयों और चर्च के जीवन में महान बनाना है।

> *“वह मेरा महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरा ही कुछ लेकर तुम्हें बताएगा।”*
> *— यूहन्ना 16:14 (ERV-HI)*

एक आत्मा-प्रेरित सेवा का चिन्ह यह है कि मसीह केन्द्र में है, न कि कोई मानव, कोई भविष्यवक्ता, या कोई संप्रदाय। यदि कोई चर्च अपने नेता को यीशु से अधिक महिमामंडित करता है, या उद्धार और आध्यात्मिक अधिकार किसी मानव नाम से जुड़ा है, तो वह सेवा किसी अन्य आत्मा से प्रेरित है।

> “इससे तुम परमेश्वर के आत्मा को जानोगे: हर वह आत्मा जो यह स्वीकार करता है कि यीशु मसीह देह में आया है, वह परमेश्वर से है; और जो इसे स्वीकार नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं है। और यही विरोधी मसीह की आत्मा है।”
> — *1* यूहन्ना *4:2-3 (ERV-HI)*

---

4. पवित्र आत्मा उपहार और सेवा देता है
(1 कुरिन्थियों 12)

जब पवित्र आत्मा किसी विश्वासवादी के जीवन में आता है, तो वह उसे आध्यात्मिक उपहार और शरीर की सेवा के लिए बुलावा देता है। ये उपहार दिखावे के लिए नहीं, बल्कि चर्च के निर्माण के लिए होते हैं।

> “पर आत्मा की अभिव्यक्ति हर किसी को सब के लाभ के लिए दी जाती है।”
> — *1* कुरिन्थियों *12:7 (ERV-HI)*

चाहे उपदेश देना हो, शिक्षा देना हो, सुसमाचार प्रचारना हो,

भविष्यवाणी करना हो , देना हो , मदद करना हो , या उपासना का नेतृत्व करना हो —हर आत्मा -प्रेरित विश्वासवादी का कोई न कोई कार्य होता है। यदि तुम वर्षों से विश्वास में हो और कोई सेवा , बुलावा या सक्रिय भागीदारी नहीं है , तो हो सकता है कि तुम्हारे पास पवित्र आत्मा नहीं है।

पौलुस ने विश्वासियों की तुलना शरीर के अंगों से की है :

> “तुम मसीह का शरीर हो , और प्रत्येक उसके अंग। ”
> *— 1* कुरिन्थियों *12:27 (ERV-HI)*

मसीह के शरीर में कोई हिस्सा निरर्थक नहीं। यदि तुम काम नहीं कर रहे , तो कुछ गलत है।

---

5. पवित्र आत्मा प्रार्थना का जीवन उत्पन्न करता है

पवित्र आत्मा की उपस्थिति का सबसे बड़ा संकेत एक तीव्र आंतरिक प्रेरणा है जो परमेश्वर से संवाद करने के लिए प्रार्थना में ले जाती है। आत्मा हमारे कमजोरियों में मदद करता है और अनकहे आह भरता है।

> “वैसे ही आत्मा हमारी कमजोरी में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि क्या प्रार्थना करें; परन्तु आत्मा स्वयं अनकहे आहों के साथ हमारे लिए मध्यस्थता करता है।”
> — रोमियों *8:26 (ERV-HI)*

सच्चा विश्वासवादी बिना प्रार्थना के हफ्तों या महीनों तक नहीं रह सकता और शांति महसूस कर सकता है। उद्धार का आनंद कम हो जाता है जब परमेश्वर के साथ संवाद उपेक्षित हो जाता है। पवित्र आत्मा हमें निरंतर प्रार्थना करने का बोझ देता है।

> “प्रार्थना से कभी न हटो।”
> — *1* थिस्सलुनीकियों *5:17 (ERV-HI)*

यदि तुम बिना प्रार्थना के सहज जीवन जीते हो, और चर्च या भक्ति बोझ लगती है, तो तुम्हें अपने आत्मा की पहचान पर सवाल उठाना चाहिए।

अगर ये संकेत तुम्हारे जीवन में नहीं हैं तो क्या करें **?**

यदि ये पाँच लक्षण तुम्हारे जीवन में नहीं हैं, तो संभावना है कि तुमने जो आत्मा प्राप्त किया है वह पवित्र आत्मा नहीं, बल्कि धोखा देने वाला आत्मा है। इसका उपाय निराशा नहीं, बल्कि सच्चा पश्चाताप और सुसमाचार की आज्ञाकारिता है।

> “पश्चाताप करो, और यीशु मसीह के नाम पर प्रत्येक व्यक्ति बपतिस्मा ले, तो तुम्हारे पाप माफ़ होंगे; और तुम पवित्र आत्मा प्राप्त करोगे।”
> — प्रेरितों के काम *2:38 (ERV-HI)*

सच्चे मन से पश्चाताप करो, हर पाप और स्वार्थ से मुंह मोड़ो।

यीशु मसीह के नाम पर जल में डुबोकर बपतिस्मा लो, जैसे प्रेरितों ने किया।

फिर परमेश्वर के वादे के अनुसार, पवित्र आत्मा तुम्हारे जीवन में आएगा—केवल एक संस्कार के रूप में नहीं, बल्कि एक रूपांतरित करने वाली उपस्थिति के रूप में।

अंतिम विचार

हम अंतिम दिनों में हैं, और आध्यात्मिक धोखा बढ़ रहा है। बाइबल हमें कहती है कि हर आत्मा की परीक्षा करो, न कि केवल अनुभव या भावना से, बल्कि परमेश्वर के वचन द्वारा। एक सतही आध्यात्मिक अनुभव पर संतोष न करो। केवल भावना या परंपरा से खुश न रहो।

अपने आप से पूछो:

क्या मेरे जीवन में पवित्र आत्मा के ये पाँच संकेत हैं?
यदि नहीं, तो प्रभु से तत्परता और सच्चाई से संपर्क करो।

> “पर तुम शरीर में नहीं, बल्कि आत्मा में हो यदि वास्तव में परमेश्वर की आत्मा तुम्हारे अंदर वास करती है। यदि किसी के पास मसीह की आत्मा नहीं है, तो वह उसका नहीं है।”
> — रोमियों *8:9 (ERV-HI)*

परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे।

Share on:
WhatsApp

Print this post